सर्पो को आकर्षित करने और दूर रखने वाली वनौषधियों से भरे हैं छत्तीसगढ़ के वन

* सर्पों से संबंधित वनौषधियों का समृद्ध पारंपरिक ज्ञान
* 350 विशेषज्ञ पारंपरिक चिकित्सकों की पहचान

वनौषधि राज्य छत्तीसगढ़ में वनौषधियों से संबंधित पारंपरिक ज्ञान के दस्तवेजीकरण मे जुटे वनौषधि विशेषज्ञ पंकज अवधिया ने आज खुलासा किया कि राज्य में सर्प दंश की चिकित्सा के लिये पारंपरिक चिकित्सक 70 से अधिक प्रकार की जड़ी - बूटियों का प्रयोग करते है। इन वनौषधियों की सहायता से पारंपरिक चिकित्सक समस्या की गंभीरता का पता लगाते है और जहरीले सर्प की पहचान करते है।सर्वेक्षणों के माध्यम से अभी तक 350 विशेषज्ञ पारंपरिक चिकित्सकों की पहचान की जा चुकी है जो कि ग्रामीण और वनीय क्षेत्रों मे अपनी नि:शुल्क सेवाएं दे रहे है।

छत्तीसगढ़ के विभिन्न भागों मे किये जा रहे इथनोबॉटेनिकल सर्वेक्षणों और अध्ययनों के हवाले से पंकज अवधिया ने बताया कि राज्य में सर्प को आकर्षित करने वाली और दूर रखने वाली वनस्पतियों के विषय पारंपरिक ज्ञान का अमूल्य भंडार है। धान के खेत जहाँ सर्प बहुतायत में होते है, में काम करने वाले आम कृषक गुम्मा नामक औषधीय खरपतवार का प्रयोग साग के रुप मे करते है। ऐसी मान्यता है कि इसका सेवन मनुष्यों के अंदर एक विशेष प्रकार की गंध उत्पन्न करता है जिससे सांप दूर रहते है। वनौषधियों की तलाश में घने वनों मे जाने वाले पारंपरिक चिकित्सकों के बीच भी यह प्रयोग लोकप्रिय है। दक्षिण छत्तीसगढ़ मे भ्रमरमार नामक वनौषधि उगती है। जिसमे सर्पों विशेषकर विषयुक्त सर्पों को आकर्षित करने की क्षमता होती है। सर्पों के माध्यम से चूहों की प्राकृतिक आबादी पर नियंत्रण हेतु खेतो मे सर्पो को आकर्षित करने वाली वनौषधियाँ लगाई जाती है जबकि घरों के आस-पास सर्पों को भगाने वाली वनौषधियों को स्थान दिया जाता है। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों मे पडरी नामक वनौषधि के फलों को घरों के अंदर रखने की परंपरा है ये फल सर्प से मिलती - जुलती आकृति के होते हैं। बहुत से खरपतवारों की जड़ों को खेतों मे काम करते समय किसान पैरों में बांध लेते है। इन जड़ों मे सर्पो को दूर रखने की क्षमता होती है। सर्प दंश की चिकित्सा में वनौषधियों का प्रयोग बाहरी और आंतरिक दोनो ही रुप से होता है। फुडहर नाम वनौषधि के सभी पौध भागों का प्रयोग पारंपरिक चिकित्सकों के बीच लोकप्रिय है। दक्षिण छत्तीसगढ़ के पारंपरिक चिकित्सक सर्प दंश की चिकित्सा के लिये परसा नामक औषधीय वृक्षों की जड़ो का प्रयोग सामान्यतौर पर करते है। सफेद फूलों वाले परसा की जड़े अधिक उपयोगी मानी जाती है। उत्तरी छत्तीसगढ़ में महुआ के विभिन्न पौध भागों का उपयोग होता है। महुआ के बीजों का प्रयोग ज्यादातर होता है। सर्प विष उतर जाने के बाद भी प्रभावित व्यक्तियों को लंबे समय तक वनौषधियों का सेवन कराया जाता है। इन वनौषधियों के साथ अधिक मात्रा मे गाय के घी का सेवन कराया जाता है।

पंकज अवधिया ने आगे बताया कि राष्ट्रीय स्तर पर सर्प विष चिकित्सा की कोई प्रमाणिक शोध विधि न होने के कारण आधुनिक विज्ञान की कसौटी पर इस अनूठे पारंपरिक ज्ञान की परीक्षा नही हो पा रही है और धीरे - धीरे यह ज्ञान विलुप्तता की कगार पर पहुँचता जा रहा है। इस दिशा मे सशक्त प्रयासों की आवश्यकता है। आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं से दूर ग्रामीण और वनीय क्षेत्रों मे यह पारंपरिक ज्ञान ही जीवन रक्षा का एक मात्र साधन है।